अत्यंत गोपनीय केवल आंतरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

अंक-योजना

विषय- हिंदी

कक्षा - दसवीं

सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी त्रुटि भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को पढ़ और समझ लें।
2. योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय कृपया दिए गए उतरों को समझे, भले ही उत्तर मार्किंग स्कीम में न हो, छात्रों को उनकी योग्यता के आधार पर अंक दिए जाने चाहिए।
3. अंक योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मान बिंदु होते हैं। ये केवल दिशा-निर्देशों की प्रकृति के हैं और पूर्ण नहीं हैं। यदि परीक्षार्थियों की अभिव्यक्ति सही है तो उसके अनुसार नियत अंक दिए जाने चाहिए।
4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का चिह्न (√) लगाएँ और गलत उतर पर गलत का (×) मूल्यांकनकर्ता द्वारा ये चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है, परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए।
5. यदि किसी प्रश्न के उपभाग हो तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दायी ओर अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग बायाँ और के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।
6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए।
7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उन्हें ही स्वीकार करे, उन्हीं पर अंक है।
8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर हर बार अंक न काटे जाएँ।
9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में पूर्ण अंक पैमाना 0-80 (उदाहरण 0-80 अंक जैसा कि प्रश्न में दिया गया है) का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।
10. ये सुनिश्चित करें कि उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण के अंकों के साथ मिलान हो।
11. आवरण पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का योग जाँच लें ।

Download from www.MsEducationTv.com

12. उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँ और शून्य (0) अंक दें।

13. उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकन समिति के सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है। परीक्षक सुनिश्चित करें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है। आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।

उपर्युक्त मूल्यांकन निर्देश उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच हेतु आदेश नहीं अपितु केवल निर्देश हैं। यदि इन मूल्यांकन निर्देशों में किसी प्रकार की त्रुटि हो, किसी प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, अंक योजना में दिए गए उत्तर से अतिरिक्त कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक अपने विवेकानुसार उस प्रश्न का मूल्यांकन करे।

अंक-योजना

विषय - हिंदी

कक्षा - दसवीं

कोड - D

कक्षा : दसवीं | अधिकतम अंक 80

सामान्य निर्देश :-

1. अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
2. वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है बल्कि ये सुझावात्मक एवम् सांकेतिक हैं।
3. यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न , किन्तु उपयुक्त उत्तर है, तो उन्हें अंक दिए जाएँ।
4. मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक योजना में दिए गए निर्देशानुसार ही किया जाए।

Download from www.MsEducationTv.com

खंड -क

प्रश्न- संख्या	उत्तर	अंक विभाजन

प्रश्न-1 व्याकरण एवम् रचना पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

क) (i) नीला है जो कमल - कर्मधारय समास 1

(ii) जन्म से अंधा - अव्ययीभाव समास 1

ख) व्यंजन का स्वर या व्यंजन से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है,
उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे - महा + आत्मा = महात्मा 2

ग) (i) अनु - अनुसार, 1

(ii) अप -अपशब्द 1

घ) (i) सोना - कनक, स्वर्ण 1

(ii) घोड़ा - अश्व घोटक 1

ङ) विकारी शब्द - लड़का, उसका , विकारी शब्द - क्योंकि, बाहर 2

च) (i) यमक अलंकार 1

(ii) उपमा अलंकार 1

छ) चौपाई एक सम मात्रिक छंद है। इस छंद के प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं और अंत में जगण और तगण नहीं होते। जैसे - 2

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।
रामदूत अतुलित बल धामा ।
अंजनिपुत्र पवन सुतनामा।

प्रश्न- 2 किसी एक विषय पर निबंध **5 अंक**

क) भूमिका 1

ख) विस्तार + निर्धारित शब्द सीमा 3

ग) उपसंहार 1

प्रश्न- 3 पत्र लेखन **5 अंक**

क) आरंभ और अंत की औपचारिकताएं 1

ख) विषय वस्तु 3

ग) भाषा 1

खंड - ख (क्षितिज काव्य खंड)

प्रश्न- 4 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर **6 अंक**

(i) ख) रोग 1

(ii) ग) लोहे से बना हुआ 1

(iii) क) रीती गागर 1

(iv) ग) गर्मी 1

(v) ख) सूरज की किरणों का 1

(vi) घ) सीमाहीन 1

प्रश्न- 5 काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर **(5)**

(i) कवि - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला , कविता - उत्साह 1

(ii) कवि ने बादलों का अहवान किया है ताकि वे पीड़ित व प्यासे लोगों के कष्टों को दूर कर सकें। 1

(iii) कवि ने बादलों का अहवान किया है ताकि वे संसार को नया जीवन प्रदान करें। 1

(iv) यहाँ बादलों को क्रांति के दूत के रूप में चित्रित किया गया है । 1

(v) प्रस्तुत काव्यांश में खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। 1

Download from www.MsEducationTv.com

प्रश्न- 6 काव्य-सौंदर्य- **(3)**

(i) भाव सौंदर्य 1½

(ii) शिल्प सौंदर्य 1½

भाव - जो शूरवीर होते हैं, वे अपनी करनी युद्ध भूमि में अपने शौर्य को दिखाते हैं, बातों से अपना वर्णन नहीं करते। शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर भी अपने प्रताप की व्यर्थ बातें करने वाला कायर ही हो सकता है।

शिल्प - भाषा - अवधी

छंद - दोहा

शैली - संवाद शैली

अलंकार - अनुप्रास - सूर समर, करनी करहिं, कायर कथहिं

स्वर मैत्री का प्रयोग है।

प्रश्न- 7 प्रश्नों के उत्तर **3+3= 6 अंक**

क) कवि ने स्वयं को इस जीवन रूपी पथ का राहगीर बताया है और इस राहगीर के लिए 'पाथेय' अर्थात संबल है उनकी पत्नी की यादें। कई बार जब मनुष्य दुःखी होता है तो सुखी जीवन की स्मृतियाँ ही उसके लिए सहारा बन जाती है। आज कवि अपनी प्रिया की उन यादों का सहारा लेकर अपने जीवन के रास्ते की थकान दूर करता है। स्मृति को पाथेय बनाने से कवि का आशय जीवन के उन सुनहरे पलों की सुखद यादों से है जो उसने पत्नी के साथ सँजोई थी। अब यही यादें उसके जीवन पथ के लिए सहारा बनी हैं।

ख) गोपियों के अनुसार योग साधना एक कड़वी ककड़ी के समान है जिसे निगला नहीं जा सकता ।वे इसे एक ऐसी बीमारी मानती हैं जिसके बारे में न देखा, न सुना और न ही भोगा। वे योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कहती हैं जिनका मन विचलित या अस्थिर है।

खंड - ग (क्षितिज गद्य खंड)

प्रश्न- 8 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर **(6)**

(i) क) दो फुट 1

(ii) ग) बेटे की मृत्यु पर 1

(iii) क) लोटा 1

(iv) ग) सात वर्ष 1

(v) ख) डुमराँव 1

(vi) ग) मानव सुख 1

प्रश्न- 9 गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर **(5)**

(i) पाठ - एक कहानी यह भी , लेखिका - मन्नू भंडारी 1

(ii) अपनों के द्वारा विश्वासघात किए जाने के कारण ही लेखिका के पिताजी का स्वभाव शक्की हो गया था । 1

(iii) पिता जी के क्रोध के कारण माँ हमेशा डरी-डरी रहती थी 1

(iv) किसी पर भी आसानी से विश्वास कर लेना ।

(v) लेखिका के पिता जी ने अंग्रेज़ी -हिन्दी शब्दकोश की रचना की, इससे उन्हें यश तो बहुत मिला लेकिन धन प्राप्त नहीं हुआ। 1

प्रश्न-10 लेखक/लेखिका परिचय **(5)**

क) जीवन परिचय 1

ख) प्रमुख रचनाएँ 1

ग) साहित्यिक विशेषताएँ 1½

घ) भाषा -शैली 1½

Download from www.MsEducationTv.com

प्रश्न- 10 प्रश्नों के उत्तर **2+2 =4 अंक**

(क) पानवाला काला, मोटा व खुशमिजाज व्यक्ति है।क़स्बे के चौहारे पर उसकी पान की दुकान थी। उसकी बड़ी सी तोंद है वह किसी भी बात को जाने बिना ही उस पर टिप्पणी कर देता है। उसके मुँह में पान ठुसा रहता था, जिससे उसके दाँत लाल-काले हो गए थे। वह कैप्टन जैसे देशभक्त को लंगड़ा व पागल कहने से नहीं चूकता था। वह संवेदनशील व्यक्ति भी है, कैप्टन की मृत्यु की बात कहते समय उसकी आँखों में आंसू छलक आए थे।

(ख) पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण गंतोक की परिस्थितियाँ भी अत्यंत कठिन हैं। अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए यहाँ लोगों को कठोर मेहनत करनी पड़ती है। पहाड़ों को काटकर रास्ता बनाना पड़ता है। पत्थरों पर बैठकर औरतें कुदाल व हथौड़े से पत्थर तोड़ती हैं। कुछ औरतों की पीठ पर बँधी टोकरी। में उनके बच्चे बँधे हुए होते हैं। उनकी मातृत्व भावना और श्रम-साधना साथ-साथ देखी जा सकती। है। यहाँ लोग अत्यंत कठिन परिस्थितियों में जीवन जीते हैं, इसीलिए लेखिका ने गंतोक को। 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा है।

(ग) लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' शब्दों की सही समझ अब तक इसलिए नहीं बन पाई है, क्योंकि हम इन दोनों बातों को एक ही समझते हैं या फिर एक-दूसरे में मिला लेते हैं। इन दोनों शब्दों के साथ कई बार 'भौतिक' और 'आध्यात्मिक' जैसे विशेषण भी लगा दिए जाते हैं। इन विशेषणों के प्रयोग के कारण यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि 'सभ्यता' और 'संस्कृति' एक ही हैं या फिर अलग-अलग वस्तुएँ हैं। यह जानना ज़रूरी है कि क्या यह एक चीज़ है अथवा दो चीज़ें हैं? और यदि दो हैं तो दोनों में अंतर क्या है? तभी सही बात समझ में आएगी। इसीलिए 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक नहीं बन पाई है।

खंड - घ (कृतिका भाग -2)

प्रश्न- 12 कृतिका भाग -2 के आधार पर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर **3+3 = 6 अंक**

(क) 'माता का अँचल' कहानी में माँ के आँचल की सार्थकता को समझाने का प्रयास किया गया है। बालक भोलानाथ का अधिक जुड़ाव पिता के साथ दिखाया गया है, परंतु जब वह साँप को देखकर डर जाता है तब वह पिता की अपेक्षा माता की गोद में छिपकर ही शांति व सुरक्षा का अनुभव करता है। भोलानाथ का अपने पिता से अपार स्नेह था, पर विपत्ति के समय जो शांति और प्रेम की छाया उसे अपनी माँ की गोद में जाकर मिली वह शायद उसे पिता से प्राप्त नहीं हो पाती। लेखक ने इसीलिए पिता-पुत्र के प्रेम को दर्शाते हुए भी इस कहानी का शीर्षक 'माता का अँचल' रखा है, जो कि पूर्णतः सार्थक है।

(ख) गंतोक एक पर्वतीय स्थल है। इसलिए यहाँ का जीवन बहुत कठिन है। यहाँ के लिए अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए खूब मेहनत करते हैं। स्त्रियाँ बच्चों को अपनी पीठ पर लादकर काम करती हैं। स्कूल जाने वाले विद्यार्थी स्कूल से आने के बाद अपने माता-पिता के कामों में हाथ बँटाते हैं। इसलिए गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा गया।

(ग) लेखक का विचार है कि प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति किसी के लेखन में कहीं अधिक सहायक होती है। अनुभव लेखक के अंदर की विवशता तथा आकुलता को बाहर निकालने में उतना सक्षम नहीं होता जितनी अनुभूति होती है। लेखन के लिए आंतरिक अनुभूति, संवेदना तथा कल्पना का होना अनिवार्य है, न कि सिर्फ़ अनुभव का। सच्चा लेखन भीतरी विवशता से पैदा होता है। जब तक रचनाकार का हृदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदित नहीं होता तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता। इसलिए प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है।

Download from www.MsEducationTv.com

खंड - ङ नैतिक शिक्षा

प्रश्न (13) (क) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर (4)

1. (ii) मारग्रेट नोबल 1

2. (iv) उपरोक्त सभी 1

3. (i) 1919 से 1939 तक 1

4. (ii) बुरे कर्म करने से 1

(ख) प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ है - जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। एक जन्म देने वाली माँ होती जो हमारा लालन - पालन करती है। माता स्वयं कष्ट सहकर बच्चे का भविष्य सँवारती है और एक अन्न-जल दे कर पालन करने वाली माँ अर्थात जन्मभूमि ।कहा भी गया है कि पालन करने वाली माँ (पृथ्वी माँ) जन्म देने वाली माँ से श्रेष्ठ होती है।

(ग) याज्ञवल्क्य ऋषि की पत्नी मैत्रेयी महान विदुषी थी। जब ऋषि ने वानप्रस्थ होने का विचार किया तो अपनी पत्नी से मन्त्रणा की और कहा कि तुम आज्ञा दो तो मैं वानप्रस्थ होने का विचार रखता हूँ। इससे उनका अपनी पत्नी के प्रति आदर भाव प्रकट होता है और साथ ही नारी के प्रति सम्मान झलकता है।

------------------------XXXXXXXXXX ---------------------------

Download from www.MsEducationTv.com